International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.193-195

समकालीन वैश्विक आर्थिक समस्याएँ एवं गांधीवादी प्रतिमान

ऋचा अंगिरा*

प्रस्तावना

समकालीन वैश्वीकरण के दौर में गांधीवादी दर्शन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। वैश्वीकरण के नाम पर शुरू हुए आर्थिक सुधारों से गरीबी, मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, अपराध, उपभोक्ता संस्कृति, नगरीकरण, केन्द्रीकरण आदि प्रवृत्तियों में वृद्धि हुयी है। इन विभिन्न समस्याओं का हल गांधीवादी प्रतिमान के अन्तर्गत मिलता है। सत्य व अहिंसा पर आधारित गांधीवादी प्रतिमान सभी समस्याओं के लिए नैतिक युक्ति प्रस्तुत करता है। गांधीवादी दर्शन सादगीपूर्ण जीवन शैली, स्वदेशी की भावना, विकेन्द्रीकरण, मानव श्रम प्रधान ग्राम अर्थव्यवस्था, बुनियादी रोजगारपरक शिक्षा, आत्मनिर्भर राष्ट्र, प्रन्यास भावना जैसे सिद्धान्तों पर आधारित है। इस गांधीवादी प्रतिमान को यदि वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अपना लिया जाए तो एक सुखद एवं न्यायपूर्ण विश्व अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जा सकता है। क्योंकि भौतिक समस्याओं के नैतिक निदान पर आधारित यह दर्शन विश्व को एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

समकालीन वैश्वीकरण के दौर में गांधीवादी दर्शन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। महात्मा गांधी इस तथ्य पर बहुत अधिक बल देते थे कि आर्थिक पक्ष और नैतिक पक्ष एक–दूसरे के पूरक है। अर्थव्यवस्था को नैतिकता से पृथक् नहीं किया जा सकता अपितु आर्थिक विकास भी नैतिकता पर ही आधारित होना चाहिए। वैश्वीकरण के नाम पर शुरू हुए आर्थिक सुधारों से गरीबी, मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, विषमता, अपराध, उपभोक्ता संस्कृति आदि में वृद्धि हुयी है। मात्र लाभ कमाने के लिए बाजार अर्थव्यवस्था में उत्पादन किया जा रहा है और प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रकृति से अन्याय हो रहा है। गांधीजी ने प्रकृति एवं मनुष्य के नैसर्गिक सम्बन्धों, स्थायी विकास एवं समुचित तकनीक पर जोर दिया। गांधीवादी दर्शन सादगीपूर्ण जीवन शैली स्वदेशी की भावना और विकेन्द्रीकरण पर बल देता है।

समकालीन विश्व में केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। आज विश्व के आर्थिक संसाधनों पर कुछ चुनिंदा विकसित देशों का ही नियंत्रण है। पश्चिम के ये पूंजीवादी विकसित देश गरीब विकासशील देशों का बड़े पैमाने पर शोषण कर रहे है। विकासशील देशों ने नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग उठायी है जो वस्तुतः वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीकरण की मांग ही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा विश्व के उत्पादन, पूंजी व तकनीक पर नियंत्रण कर लिया है। जिससे वैश्विक स्तर पर केन्द्रीकरण व आर्थिक असमानता निरन्तर बढ़ती जा रही है। गांधीजी केन्द्रीकरण को भी हिंसा का ही प्रतीक मानते हैं। उनके अनुसार शोषण व असमानता का प्रमुख कारण ही आर्थिक क्षेत्र में केन्द्रीकरण है। इसके विकल्प के रूप में उन्होंने अहिंसक अर्थव्यवस्था के विचार को प्रस्तुत किया है। इसी अहिंसक अर्थव्यवस्था को वे विकेन्द्रीत अर्थव्यवस्था का नाम देते हैं। इसकी संरचना विकेन्द्रीत होगी अर्थात् इसमें उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी कार्य को स्थानीय स्तर पर किया जाएगा। इस ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संचालन में विभिन्न कुटीर एवं ग्राम उद्योगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। इसके उत्पादन एवं वितरण का आधार जन सहयोग होगा। यहाँ मूलतः मानव श्रम की प्रधानता होगी, अतः सभी को रोजगार प्राप्त होगा। यह समकालीन विश्व में समावेशी विकास के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक हो पाएगी क्योंकि इस अर्थव्यवस्था का आधार ही विकेन्द्रीकरण है।

---

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, श्री प्र.सिं.बा. राजकीय महाविद्यालय, शाहपुरा, भीलवाड़ा, राजस्थान।

आज वैश्विक स्तर आर्थिक असमानता, नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएँ व पर्यावरण सम्बन्धी गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। गांधीजी इस औद्योगिक सभ्यता के पूरी तरह विरूद्ध थे। उनका मत है कि औद्योगिकरण ही विश्व में तनावों, संघर्षों और युद्धों की आंकाक्षाओं का प्रमुख कारण है। इसके कारण बेरोजगारी व आय की असमानताएँ आदि समस्याएँ उत्पन्न हो ने लगती है। साथ ही औद्योगिकरण के कारण वैश्विक समाज का नैतिक पतन भी होता है क्योंकि राष्ट्र आत्मनिर्भर होने की अपेक्षा अन्य राष्ट्रों पर निर्भर होते चले जाते हैं। गांधी जी ने कहा है कि औद्योगिकरण के कारण इन पश्चिमी राष्ट्रों का अनिवार्य नैतिक पतन हो रहा है, क्योंकि इन्हें अपनी अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए अन्य राष्ट्रों का शोषण करना पड़ रहा है। औद्योगीकरण से ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था का स्वरूप नष्ट हो जाता है व क्षेत्रीय असंतुलन व गांव व शहरों के मध्य विरोध जैसी अनेक समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती है। उनका कहना है "आज एक छोटे से देश (इंग्लैण्ड) के आर्थिक साम्राज्यवाद ने सारे संसार को गुलामी की जंजीर में बांध रखा है। यदि तैंतीस करोड़ लोगों का समुदाय भी यह आर्थिक शोषण का मार्ग अपना ले तो वह संसार को पूरी तरह तबाह कर देगा। यंत्रों पर आधारित औद्योगिक अर्थव्यवस्था उत्पादन कार्य में लगे श्रमिक को उसकी वैयक्तिकता तथा सृजन के नैतिक सुख से भी वंचित कर देती है। जिससे व्यक्ति का नैतिक पतन भी होता है। औद्योगिकरण एक ऐसी विकृत सभ्यता व संस्कृति को जन्म देता है जिससे मानव व उसके नैतिक मूल्यों की उपेक्षा होती है। यह शहरीकरण की प्रक्रिया में वृद्धि करता है जिससे सामाजिक व आर्थिक अपराध बढ़ते है व पर्यावरण को क्षति पहुँचती है।

समकालीन विश्व में बेरोजगारी की समस्या निरन्तर बढ़ती चली जा रही है। आज की शिक्षा मात्र किताबी ज्ञान रह गयी है, जो रोजगार प्राप्ति में सहायक नहीं है। गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचार पर्याप्त व्यावहारिक है जिसमें उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति व समाज दोनों के आधारभूत हितों की पूर्ति का साधन माना है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के द्वारा बेरोजगारी की समस्या का हल प्रस्तुत किया है। उनके इस विचार को विश्व में लागू करने की महत्ती आवश्यकता है।

वैश्वीकरण के इस दौर में केन्द्रीकरण व वैश्विक असमानता आदि का एक प्रमुख कारण गांधीजी के स्वदेशी के विचार को न अपनाना रहा है। स्वदेशी का विचार विकासशील व अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्था के संरक्षण में और भी महत्त्वपूर्ण है। समकालीन समय में वैश्विक स्तर पर वही राष्ट्र शक्तिशाली माना जाता है जो अधिकांश मामलों में आत्मनिर्भर हो। आज नव उपनिवेशवाद इसी कारण बढ़ता चला जा रहा है। आज भी विभिन्न विकसित देश आर्थिक संरक्षणवाद की नीतियाँ अपनाकर स्वदेशी के विचार को ही पुष्ट कर रहे हैं। गांधीजी के अनुसार स्वदेशी के द्वारा हम आर्थिक क्षेत्र में समानता, न्याय, स्वतन्त्रता एवं स्वावलम्बन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। यह विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की स्थापना करता है। गांधीजी ने चरखा और खादी को स्वदेशी पर आधारित अर्थशास्त्र के दो प्रभावशाली प्रतीक बताया और कहा कि ये दोनों भारत के हजारों गांवों में फैली हुयी गरीबी और बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर सकते हैं। स्वदेशी का विचार सभी देशों के प्रसंग में राष्ट्रीय स्तर पर स्वावलंबी व आत्मनिर्भर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। साथ ही यह अनुपूरक रूप में आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रों के बीच सीमित एवं मर्यादित रूप में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विनिमय को मान्यता भी देता है।

इसी प्रकार महात्मा गांधी ने श्रम की गरिमा व कायिक श्रम को भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। गांधीजी का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका का उपार्जन शारीरिक श्रम के द्वारा ही करना चाहिए। इसे उन्होंने 'पसीने की रोटी कहा है।' गांधीजी प्रकृति के नियम को स्पष्ट करते हैं कि 'महान प्रकृति की इच्छा तो यही है कि हम रोटी पसीना बहाकर कमाये।' उनके अनुसार इससे बीमारियाँ घटेंगी और स्वास्थ्य एवं आयु में वृद्धि होगी। उपज भी बढ़ेगी, आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। बेरोजगारी, आर्थिक असमानता, दरिद्रता व शोषण का अन्त होगा। इससे सभी व्यवसायों को भी समान महत्व प्राप्त होगा, समाज में ऊँच–नीच का भेद खत्म होगा, सामाजिक सहयोग में वृद्धि होगी व समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

गांधीजी बड़े यंत्रों पर आधारित, अनियंत्रित विकास के विरूद्ध थे। उन्होंने विकसित यंत्रों पर आधारित औद्योगिक व्यवस्था को मानवता के समक्ष उपस्थित समस्याओं का मूलभूत कारण माना है। मशीन के विकास एवं

औद्योगीकरण से एक राष्ट्र के पास दूसरे राष्ट्र का शोषण करने की क्षमता आ जाती है। उनका मानना है कि यदि मशीनों पर मनुष्य की निर्भरता बढ़ती ही गई तो एक दिन मशीन मनुष्य को नियंत्रित करेंगी और यह अवस्था मानवीय सभ्यता के पतन का प्रतीक होगी। यह मनुष्य के श्रम को प्रतिस्थापित कर उसका स्थान ले लेती है और बेरोजगारी को जन्म देती है। गांधीजी सीमित अर्थ में मशीन की उपयोगिता को स्वीकार करते थे। वे मात्र भारी व जटिल मशीनों के विरूद्ध थे। इस प्रकार उनका उद्देश्य यंत्र का विरोध करना नहीं अपितु मानव कल्याण को सुनिश्चित करना है।

समकालीन विश्व में कुछ चुनिंदा पूंजीपतियों ने आर्थिक संसाधनों पर नियन्त्रण कर लिया है, वहीं दूनिया का एक बड़ा भाग नारकीय जीवन जीने पर विवश है। ऐसे में गांधी द्वारा सुझाया गया प्रन्यास सिद्धान्त बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो उठता है। यह पूंजीवाद की बुराईयों का अहिंसक प्रतिकार प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार पूंजीपतियों के ह्रदय परिवर्तन का प्रयत्न किया जाए ताकि वे अपने नियंत्रण में आने वाली सम्पत्ति को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति न समझे बल्कि उसे जनता की धरोहर समझकर अपने–आपको उसका न्यासधारी या संरक्षक समझे और उसका उपयोग सम्पूर्ण समाज की उन्नति एवं कल्याण में करने को तत्पर हो। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि समाज उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में उद्यमशील और प्रतिभाशाली व्यक्तियों की योग्यता से तो पूरा फायदा उठाएगा, परंतु सम्पत्ति से पैदा होने वाले शोषण और अन्याय से मुक्त रहेगा। प्रन्यास सिद्धान्त के द्वारा गांधीजी पूंजीवादी व साम्यवादी दोनों व्यवस्था के दोषों को दूर करते हैं व आर्थिक समानता की स्थापना पर बल देते हैं आज भी समाज में बिल गेट्स, मार्क जकरबर्ग, अजीम प्रेमजी, वारेन बफेट जैसे कई उद्योगपति हैं जो अपनी आय का बड़ा हिस्सा समाज सेवा में खर्च करते हैं। इसी प्रकार भारत सरकार के द्वारा भी 2013 में कार्पोरेशन सोशल रिस्पोन्सबिलिटी कानून पारित किया गया है जिसके अनुसार एक कम्पनी को अपनी कुल शुद्ध आय का कम–से–कम 2 प्रतिशत भाग सामाजिक कार्यों पर खर्च करना होता है।

इस प्रकार समकालीन विश्व में उत्पन्न हुयी विभिन्न आर्थिक समस्याओं का हल गांधीवादी प्रतिमान के अंतर्गत मिलता है। क्योंकि वैश्विक अन्य सभी प्रतिमान भौतिक विकास पर आधारित हैं जबकि गांधीजी का आर्थिक प्रतिमान नैतिक विकास पर बल देता है। सत्य व अहिंसा इसके केन्द्र में है। यह समावेशी विकास का प्रतिमान है अतः सभी समस्याओं का व्यावहारिक हल प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- यंग इंडिया, 15 अप्रैल, 1926.
- हिन्दी नवजीवन, 20 दिसम्बर, 1928
- हरिजन, 20 जून, 1936
- मो.क. गांधी (सम्पा. सिद्धराज ढ़डढा): मेरे सपनों का भारत (संक्षिप्त); पृ. 24.
- यंग इंडिया, 11 अप्रैल, 1929
- हिन्दू, 21 दिसम्बर, 1931.
- ओ.पी. गाबा, राजनीति विचारक विश्वकोश, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा 2014, पृ.सं. 103
- Corporate Social Responsibility Indian Companies Act, 2013.

❖◆❖